डा0 विजय नाथ ज्योतिषचार्य
2F, St.-11, Zone-I
Khursifar
Bhilai, Durg (C.G)

प्राचीन भारतीय ग्रन्थों के दोहे
(में छिपा ज्योति रहस्य)

महान कृष्ण भक्त रहीम जी भक्तिधारा के श्रेष्ठ कवि माने गये हैं इनकी कविता अत्यन्त प्रसिद्व है। रहीम जी साहित्य के क्षेत्र में ही नही वल्कि फलित ज्योतिष शास्त्र के भी विद्वान थे इनकी विद्वता "खेटकौतुकम" नामक ग्रन्थ से पता चलता है। यद्यपि यह बहुत लघु ग्रन्थ है लेकिन काफी सटीक हैं। इनका जन्म सवंत् 1610 माना गया है। ये संस्कृति, फारसी अवधि, बृज तथा हिन्दी के जानकार थे। अकबर के शासन में कई महत्वपूर्ण पद पर रहे तथा शासन की ओर से कई जागीरे प्राप्त थी। इसके बावजूद भारतीय दर्शन, धर्म भक्ति का प्रभाव इनके ह्रदय पर पड़ा, और ऐसा छाप पडा कि पूरा जीवन सदा के लिए समर्पित हो गया। इसका उल्लेख इस दोहे से पता चलता है–

तै रहीम मन आपनौ कीन्हौ चारू चकोर।
निसि वासर लाग्यौ रहै, कृष्णा चन्द्र की ओर

रहीम जी परोपकारी के साथ दानी भी थे, इनके द्वार से कोई खाली हाथ नही जाता, उनको कोई घमंड भी नही थे। वे अपने ठाकुर जी को भी असली दात्रा बताते थें।

देनदार कोइ और है देत रहे दिन रैन यातें।
लोग भरम मो पर करें यातें नीचे नयन।।

यह अलग बात है कि इतना होने पर भी भाग्य कहीं न कहीं इनको खोटा करार दिया, अकबर के निधन के बाद जहॉगीर के शासन में इनको अपमानित होना पड़ा और सारी सम्पत्ति छीन ली गयी भाग्य या ग्रह नक्षत्रो की विडम्बना देखिए कि कभी हाथी पर बैठने वाले सेनाअध्यक्ष को अब नंगे पैर चलना पड़ा राजा से रंक बन गये वे नियत का विधान मानकर संतुष्ट रहे। यही अनुभूति ने, ग्रह–बल, दैव बल, ज्योतिष चक्र की ओर उन्मुख हो उठे, इसका परिणाम ग्रहमीमांस "खेटकौटुकम" में मिला "खेटकौटुकम" में दो पद खेत और कौटुम यानी खेल तमाशा चमत्कार ऐसा चमत्कार ग्रहो द्वारा जीवन में होता है जैसें कि यह लघु ग्रन्थ है दो भागों में है पहला भावफलाध्याय, दूसरा राजयोगाध्याय। प्रथम भावफलाध्याय में कुण्डली के 12 भाव, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल बुद्व का प्रभाव बताया गया है। इनके अनुसार राहु केतु का फल एक जैस ही होता है।

जैसे लग्न में स्थित सूर्य होने पर मनुष्य दुर्बल, सभी से अपमानित, बगीचे में भ्रमण करने वाला होता है। अतः बारह भाव में सूर्य का फल की बात कही है। इसी प्रकार नवम् भाव में वृहस्पति का प्रभाव जातक को कुलीन भाग्यवान, सूखी, ईश्वभक्त परिवार से सम्पन्न होता हैं।

दूसरा भाग राज भोगाध्याय के अन्तर्गत विभिन्न भावों में ग्रह कैसा राजयोग देता है उसका वर्णन है। यदि जन्म काल में वृहस्पति कर्क, धनु राशी में, शुक्र दशम या द्वितीय हो तो बादशाह बनता है।

मुश्तरी

यदा मुश्ती कर्कटे वा कमाने
यदा चश्मखोरा जमी वासमाने।
तदा ज्योतिषी क्या लिखे क्या पढ़ेगा।
हुआ बालका बादशाही कटेगा। (2।14)

फारसी शब्द–

कमाने (धनुराही), राशि, चश्मखोरा(शुक्र), जमीन (द्वितीय भाव)
वासयाने (दशमभावा)

इसी प्रकार अस्टमभाव में शुक्र, द्वितीय भाव में वृहस्पति जन्म लग्न में राहु हो तो चक्रवर्ती राजा बनाता है–

आयुखाने चश्मखोरा मालखाने च मुश्तरी।
राहु जो पैदामकाने शाह होवे मुल्कका।।
[विद्वानों के अनुसार]

डा0 विजय नाथ ज्योतिषचार्य
2F, St.-11, Zone-I
Khursifar
Bhilai, Durg (C.G)